Vol 5 Issue 7 April 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

गढ़वाली लोक गाथाओं में नारी पात्र

वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल

वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल

प्रस्तावनाः–

गढ़वाली लोक गाथाएं गढ़वाल के लोकसंगीत का प्रमुख आधार हैं। आख्यानमूलक इन गाथाओं में लोक के इतिहास, धर्म–अध्यात्म एवं जनजीवन का सुंदर प्रतिबिंबन मिलता है। लोक की भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति इन गेय कथाओं में प्राचीन गढ़वाल के हर्ष–विषाद, हास–परिहास, समृद्धि–दरिद्रता, करुणा–अनुराग एवं शौर्य–पराक्रम का उत्कृष्ट प्रदर्शन मिलता है।

लोक गाथाओं का आधार पौराणिक है। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ ही कल्पना और अतिशयोक्ति का भी सुंदर चित्रांकन मिलता है। लोकगाथा गाकर कही जाने वाली कथा है, जिसमें प्राचीनता, ऐतिहासिकता, भक्ति, साहस, धर्म और प्रणय के तत्त्व समाविष्ट होते हैं।

लोकगाथा गीत की भाषा में लंबा–चौड़ा वह रोचक आख्यान है, जिसमें कल्पना के साथ ऐतिहासिक बिंदु भी होता है।[1]

लोक गाथाएं प्रबंधात्मक गीत हैं। इनमें गेयता के साथ कथानक की प्रधानता होती है।...लोक गाथाएं आकार में बड़ी और विस्तृत तथा लोकगीत छोटे होते हैं। इनमें प्रेम का गहरा पुट, सघर्ष और अंत में प्रेम की जीत होती है।...ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में पद्य अथवा गीत के अर्थ में 'गाथा' शब्द का प्रयोग मिलता है। 'गामिन' शब्द का प्रयोग गाने वाले के अर्थ में किया गया है। 'गाथा' शब्द एक विशिष्ट विधा के लिए प्रयोग किया मिलता है।[2]

वीरगाथाएं और प्रेम गाथाएं, जिन्हें गढ़वाली में 'पंवाड़ा' कहा जाता है– अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें जहां इतिहास की रंग–बिरंगी झलकियां और कल्पना के इंद्रधनुषी तानेबाने मिलते हैं, वहां शब्दों का जादुई चमत्कार, उपमाओं का सुंदर सौष्ठव और शैली का अद्भुत रूप भी मिलता है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से इनकी अपनी एक अलग विशेषता है।[3]

स्पष्ट होता है कि लोक गाथाएं वास्तव में ऐसे रोचक गीत होते हैं, जिनमें इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय होता है। लोकगीतों की ही तरह इनका भी विशद् भंडार है। इनमें जीवन के सभी पक्ष सुंदर और प्रभावी ढंग से चित्रित होते हैं। मानव मन को मोहित करने वाली विचित्र शैली वाली इन गाथाओं का आकार लोक गीतों से बड़ा होता है।

गढ़वाल में लोकगीतों के समान ही लोक गाथाओं का बहुत बड़ा अक्षय भंडार है। अंतर इतना ही है कि लोकगीत खास अवसर की अपेक्षा नहीं रखते, किंतु लोक गाथाएं अवसर–विशेष से संबंधित होती हैं। जागर गाथाएं धार्मिक गाथाएं होने के नाते आनुष्ठानिक होती हैं, चैती गाथाएं चैत के महीने औजियों द्वारा किसी समय गृह–द्वारों पर गाई जाती थीं और वीर गाथाएं तो युद्ध के समय चंफ्या–हुड़क्याओं तथा भाटों द्वारा मध्यकाल में रची और गाई जाती रहीं।[4]

आकार, भाव, गायन पद्धति और वर्ण्य विषय के आधार पर गढ़वाली लोक गाथाओं को कई रूपों में विभाजित किया जा सकता है, लेकिन इस वर्गीकरण में एक गाथा की दूसरी से कुछ–कुछ मेल खाती विशेषता इसमें बाधा उत्पन्न कर देती है। उदाहरण के लिए प्रणय प्रधानता के कारण इन गाथाओं को प्रणय गाथा कहा जा सकता है, लेकिन कतिपय वीरता की घटनाओं वाली तथा धर्म प्रधान गाथाओं में भी

प्रणय तत्त्व मिल जाता है। इसी प्रकार प्रणय गाथाओं में भी वीरता के प्रसंग आते हैं तो अनेक जागरों में प्रणय के प्रसंग विद्यमान हैं। वैसे प्रकृति के आधार पर यदि विचार करें तो गढ़वाली गाथाएं धर्म, वीरता, प्रणय तत्त्वों की प्रधानता वाली ही हैं। धर्म तत्त्व वाली गाथाएं वे हैं, जिनके प्रस्तुतिकरण में देवी–देवता अवतरित होते हैं। वीरता वाली गाथएं युद्ध–संघर्षों के वर्ण्य विषय वाली हैं तथा प्रणय तत्त्व वाली गाथाओं का वर्ण्य विशय प्रेम है। कुछ इसी प्रकार का वर्गीकरण गढ़वाली लोक गाथाओं के मर्मज्ञ डॉ. गोविंद चातक ने किया है। उन्होंने इन गाथाओं को चार वर्गों में विभाजित किया है।[5]

जागर गाथाएंः इन्हें धार्मिक गाथाएं भी कहा जा सकता है। जागर, गीत और गाथा दोनों रूपों में मिलते हैं। जागर गाथाएं सामान्यतः दैवी शक्ति के आह्वान तथा माध्यम को देवता के रूप में नचाते हुए जागरी पुरोहित अथवा आवजी–वादक द्वारा गायी जाती हैं। नागराजा, पांडवों आदि की गाथाएं जागर गाथाओं के अंतर्गत आती हैं।

पवाड़े अथवा वीरगाथाएंः ये मध्यकाल की रचनाएं हैं, जब गढ़वाल 52 गढ़ों में विभाजित था। इन गढ़ों में सामंत अपनी सत्ता के लिए एक–दूसरे से लड़ाई करते थे। वे स्वयं वीर होने के साथ ही वीरों को जागीर या वेतन देकर सेना में भी रखते थे। इन गढ़वाली गाथाओं के अंतर्गत कफू चौहान, कालू भंडारी, सुरजू कुंवर, ब्रह्मकुंवर, तीलू रौतेली, भानू भौंपेलो आदि पवाड़े आते हैं।

प्रणय गाथाएंः प्रणया गाथाएं प्रेम गाथाएं हैं। प्रेम इनका मुख्य विषय है। घटनाओं का विचित्र ढंग से घटना, स्वप्न में प्रेम के भाव का उदय अथवा प्रत्यक्ष दर्शन से मुग्ध हो जाना, उस पर विजय प्राप्त करना औरअंत में विवाह संपन्न होना, बीच में युद्ध होना, तंत्र–मंत्र, जादू–टोना का प्रयोग, देवताओं का अनुग्रह अथवा कोप, जीव–जंतुओं के द्वारा सहायता प्राप्त करना आदि इनकी विशेषताएं हैं।

विषय की दृष्टि से इन्हें भी रूपाकर्षण–परक, सत अथवा दांपत्य जीवन–परक, योग–परक, धर्म–परक, तथा मातृ–प्रेम–परक पांच भागों में विभाजित किया गया है। जीतू बगड्वाल, फ्यूंली रौतेली, रामी, सरू, राजुला–मालूशाही आदि गाथाएं इनके अंतर्गत आती हैं।

चैती गाथाएंः इन गाथाओं को औजी–आवजी ढोलवादक सवर्णों के गृह–द्वारों पर अन्न मांगते हुए गाते हैं। वर्ण्य विषय की दृष्टि से इनमें मायके और वहां के स्वजनों विशेषतः भाइयों के प्रति अपरा स्नेह व्यक्त हुआ है। सदेई की गाथा इस वर्ग की प्रमुख गाथा है। दान को प्रेरित करती राजा बलि की गाथा भी इसी वर्ग की गाथा के अंतर्गत आती है।

गढ़वाली लोक गाथाएं और नारी

नारी के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव जीवन पद्धति में वह विधाता की सर्वोत्तम परिकल्पना है। यह ईश्वर की महत्वपूर्ण रचना है। शास्त्र–पुराणों में नारी का महत्व प्रतिपादित है। यजुर्वेद में नारी के संबंध में कहा गया है–हे स्त्री उत्तम वाणी युक्ता, रमणीया, पूजनीया, कमनीया, चंद्र के समान अह्लादकारिणी, श्रेष्ठशील से प्रकाशमान अर्थात् ज्योति के समान अज्ञानांधकार को अपने दिव्य गुणों से दूर करने वाली, दीनता एवं हीनता के भावों से रहित परंपरा से पूर्ण, विविध गुणों से प्रसिऋ, विविध विधाओं में प्रवीण ये तेरे नाम हैं। तू उत्तम गुणों के लिए उपदेश दिया कर।[6]

गढ़वाली लोक गाथाओं में भी इसी प्रकार नारी के महत्व का प्रतिपादन हुआ है। अधिकांश गाथाएं नारी पर केंद्रित हैं। गाथाओं में वह युद्धों के कारण से लेकर प्रणय की विषय वस्तु तक है। गाथाओं में उसके नाना रूपों का उद्घाटन है। रणचंडी, दयानिधि, तपस्विनी, प्रेरणा स्रोत, स्वाभिमानी, श्रेष्ठ चरित्रवान इत्यादि रूपों में वह प्रकट हुई है। वहीं, वह शोषित, विवश और उपेक्षित रूपों में भी सामने आई है। अपनों के ही षड्यंत्रों का शिकार बनकर वह दया की पात्र बन पड़ी है। उसके शौर्य और सतीत्व का गाथाओं में श्रेष्ठ चित्रांकन हुआ है। लोक गाथाएं प्रतिबिंबित करती हैं कि अभाव, संघर्षमय जीवन और विपरीत परिस्थितियों के बाद भी यहां की नारी अपने आदर्शों और कर्तव्यों से विरक्त नहीं हुई है।

गढ़वाली गाथाओं में नारी का सौंदर्य यत्र–तत्र परिलक्षित हुआ है। श्रृंगार रस प्रधान प्रधान प्रणय गाथाओं में नारी के सौंदर्य अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। कृष्ण–नागराजा संबंधी कुछ गाथाओं में और पवाड़ों में नारी–सौंदर्य के जीवंत दर्शन होते हैं। सुंदर स्त्री की तुलना इंद्र की परी और अप्सरा से की गई है। ऐसी रूपसी युवतियों अथवा राजकुमारियों के प्रति नायकों के मन में तीव्र आकर्षण और प्रेमों के बीजों का अंकुरण स्वप्न में होता है। किसी रूपवती पर मुग्ध होकर नायक अथवा वीर उससे विवाह करने का संकल्प लेकर निकल पड़ता है। गुरु का आशीर्वाद लेकर, विभिन्न बाधाओं–चुनौतियों का सामना करते हुए कभी नायक लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाता है तो कभी किसी षड्यंत्र का शिकार होकर मारा जाता है। अर्थात् नारी का सौंदर्य गाथाओं में संघर्ष का कारण भी है।

सुरजू कौंल की गाथा के कथानक के अनुसार सुरजू लोहागढ़ की सुंदरी जोत्रमाला के सुंदर अंग–प्रत्यंग पर स्वप्न में इतना मुग्ध हो जाता है कि वह उससे विवाह करने का संकल्प ले लेता है। जोत्रमाला का हृदय सूर्य और पीठ चंद्रमा की तरह है। उसकी कमर आकर्षक है, वेणी पर्वत श्रृंखला, मांग नदी की तरह है। उसकी पिंडलियां धोबी की मुंदरी की तरह हैं। नाक खड्ग की धार और होंठ दाड़िम के फूल के समान सुंदर हैं–

हिया च सुरीज जैंको पीठी चंदरमा,
कमरी दिखेंद जैंकी कुमाली सी ठांणा,
बिणोटी दिखेंद जैंकी डांडा सी चुडीणा
सिंदोली दिखेंद जैंकि धौली जसो फाट,
फिलोरी दिखेंद जैंकि धोबी सी मुंदरी
नाकुणी दिखेंद जैंकि खडक सी धार,
ओठणी दिखेंद जैंकि दालिमा सी फूल।[7]

श्रीकृष्ण को रसिकता का उपासक व्यंजित करती कुसुमा कोलिन की गाथा में दर्शाया गया है कि नदी में स्नान करने गई एक

सुंदरी कुसुमा पर वे इस स्तर तक आसक्त हो जाते हैं कि पीछे–पीछे उसके घर तक पहुंच जाते हैं। कुसुमा यमुना में स्नान करने गई थी। तट पर उसका एक केश टूटकर गिर गया। उस सुनहरे केश को देख कृष्ण कल्पना करने लगते हैं कि ऐसी सुंदर उसकी लट है तो स्वयं कितनी सुंदर होगी! कृष्ण का मन मोहित ओर चित्त चंचल हो गया–

नहेंदी धुयेंदी कुसुमा छटकौंदी लट,
तौं लटू मा एक लट लटक्याळी टूटीगे,
टूटीक बगदी–बगदी पौंछीगे कृष्ण का धोरा,
देखे कृष्णन वा सोवन की लट–
उंकू मन मोइत होइगे चित होइगे चंचल! [8]

नारी के आकर्षण पर मुग्ध नायक के लिए वह किसी रहस्य से कम नहीं है। वह नायक को बरबस ही आकर्षित करती है। नारी के सौंदर्य पर न केवल नायक मोहित हुए, अपितु इसे लेकर रक्त संघर्ष भी हुए। सुंदर नारी एक प्रकार से कई क्षेत्रों में शत्रुता एवं मार–काट का कारण बन गई। नरु–बिजुला की गाथा के अनुसार उत्तरकाशी के तिलोथ गांव के नरु और बिजुला वीर जब बारह गांवों के गढ़पतियों की कन्या गिठिया पर मोहित हुए तो उसे उठाकर ले गए। उस सुंदर युवती के गांव के कई लोग नरु–बिजुला को मारने ज्ञानसू पहुंचे। नरु और बिजुला ने इन सैकड़ों लोगों की पिटाई कर भागने पर विवश कर दिया था।[9]

गढ़वाली लोक गाथाओं की पात्र नारी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह तप–संयम की पराकाष्ठा तक पहुंची है। कभी पुत्र की प्राप्ति, कभी इच्छित वर की प्राप्ति के लिए वह कठोर साधना करती है। पुत्र प्राप्ति के लिए कुंती दुर्वासा ऋषि की सेवा करती है। वह सूर्य को अर्घ्य देती है, मंत्र जप करती है तो कर्ण उत्पन्न होते हैं। वह बारह वर्ष तक धर्म मंत्र का जप करती है, जिससे धर्मराज युधिष्ठिर उत्पन्न होते हैं। वह वायु मंत्र का जप करती है तो भीम उत्पन्न होते हैं। इंद्र के जप से अर्जुन, बारह वर्ष तक पांडु मंत्र पढ़ने से नकुल और ब्रह्म मंत्र पढ़ने से सहदेव उत्पन्न होते हैं–

कोंती माता होली धर्म्याली माता,
बार बारस तैं करदी रै दुर्बासा की सेवा
तब रिषि दुर्बासा परसन्न ह्वेन,
कोंती माता तैं पुत्र बरदान दीने!
.....
सूरज तैं वा पाणी चढ़ौंदी,
मंत्र जाप करे तब वीन–
प्रभु की लाला छई, कर्ण पैदा ह्वैगे।
बार वर्ष पढ़े मातान धर्म मंत्र,
धर्म मंत्र पढ़ीक ह्वै गैन धर्मराज!
बर वर्ष पढ़े मातान वायु मंत्र,
पैदा ह्वैन तब बली भीमसण!
बार वर्ष करे मातान इंद्र को जाप,
पैदा ह्वै गैन हां जी, अर्जुन धनुर्धारी!
तब बार वर्ष बढ़े मातान पांडु मंत्र,
त पैदा ह्वैन नकुल कुंवर!
बर वर्ष पढ़े मातान ब्रह्म मंत्र,
पढ़ीक कनो ह्वैगे सहदेव ब्रह्म! [10]

रामी की गाथा पतिव्रत धर्म के पालन का श्रेष्ठ उदाहरण है। रामी ने 12 वर्ष तक परदेश गए पति की प्रतीक्षा की। एक दिन वह लौटा और उसने साधु के वेश में रामी की परीक्षा ली। वह उसमें खरी उतरी–

बोल बौराणी क्या तेरू नौं च,
बोल बौराणी कख तेरू गौं च,
रौतू की बेटी छौं रामनी नौं च
सेटू की ब्वारी छौं पाली गौं च।

इन गाथाओं में नारी के सतीत्व में दिव्य शक्ति निहित होती दिखाई देती है। यह सतीत्व असंभव को संभव कर देता है। असंभव की सिद्धि के लिए नारी अपने सत को ललकारती है, उसका स्मरण करती है। यह उसका संकटमोचक भी प्रतीत होता है। वह कहती है कि यदि मैं सच में दो की पुत्री और एक की पत्नी हूं तो अमुख कार्य हो जाए। अर्थात् वह स्वयं के साथ ही अपनी मां के प्रतिव्रत धर्म की भी परीक्षा लेती है। चंद्रावती की गाथा में पांच दिन के अपने शिशु पति के साथ विवश शिशुपाल की कन्या चंद्रावती वृक्ष के नीचे बैठकर अपने सतीत्व, सत्य

और पतिव्रत धर्म का स्मरण करते हुए कहती है कि यदि मैं दो की पुत्री और एक की पत्नी हूं और मैंने पांच दिवसीय इस बालक को पति के रूप में वरण कर उसका सम्मान किया होगा तो मेरी उंगली पर इसके लिए दूध उत्पन्न हो जाए–

सती होलू मैं राजड़ो अंगस,
द्वि की जाई होलू एक की जोई।
जु येइ पंचुळा का बाळीक पर मैन,
ध्यान धरी होलू, यू कू मान रखी होलू–
त मेरी आंगुली पर दूद उपज्यान।[11]

नारी के सतीत्व और निष्कपट मन की शक्ति में ईश्वरीय गुण आरोपित किए गए हैं। इस शक्ति से मृत देह में प्राण उत्पन्न हो जाते हैं। जसी की गाथा के अनुसार पर पुरुष पाप की आशंका पर उसकी सास पद्मावती जसी की हत्या कर देती है। जसी का पति वीरुवा भंडारी जसी के शव पर गंगा जल के छींटे मारते हुए स्मरण के साथ विलाप करता है कि जसी दो की पुत्री और एक की पत्नी रही होगी तो सोये व्यक्ति की तरह जाग जाए। ललकार–पुकार लगाता है–जसी! तूने कोई पाप नहीं किया, तेरा मन निर्मल रहा, किसी को अपशब्द नहीं कहे और पर पुरुष के विषय में नहीं सोचा होगा तो जीवित हो जा। जसी इस परीक्षा में खरी उतरती है–

तब वीरुवा गंगाजल को लगोंद छीटो,
सते होली तू दुयो की जाई, एक की जोई,
त उठी जा सेयां की चार।[12]

गाथाओं में नारी अपने पति की सच्चे अर्द्धांगिनी–सहचारिणी प्रदर्शित होती है। वह विकट और विषम परिस्थितियों में भी पति का अनुसरण कर उसके साथ कदम मिलाकर चलती है। पांडवों की गाथा में कुंती अपने पुत्रों से कहती है कि पांडु के लिए श्राद्ध के लिए गैंडे के चर्म की आवश्यकता है। पांडव गैंडे की खोज में निकलते हैं। द्रौपदी भी उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट कर अपने पत्नी धर्म के पालन कोअ आतुर हो जाती है। वह कहती है कि मैं भी आपके साथ चलूंगी। माग में आप लोगों को भूख लगेगी तो मैं भोजन बनूंगी, प्यास लगेगी तो पानी बनूंगी। चढ़ाई पर आपको लाठी के रूप में सहारा दूंगी और सोते समय नारी बनूंगी–

मैं भी मेरा स्वामी संग मांग औंदू ताछुम ताछुम,
भूख लगली मैं भोरजन ह्वै जौलू, ताछुम ताछुम,
तीस लगली मैं जल ह्वै जौलू, ताछुम ताछुम,
उकाळ लगली मैं लाठी बणी जौलू ताछुम ताछुम,
सेज की बगत मैं नारी होई जौलू ताछुम ताछुम।[13]

गाथाओं में वीर–भड़ों के शौर्य का यशोगान तो दृष्टिगोचर होता ही है, वीरांगनाओं का पराक्रम और साहस भी दर्शनीय है। रणचंडी बनकर तीलू रौतेली कत्यूरी सेना का संहार करती है तो उसकी जय–जयकार होती है, किंतु अंत में वह भी एक शत्रु के षड्यंत्र का शिकार होकर मार दी जाती है–

जब तक भूमि, सूरज आसमान,
तीलू रौतेली की तब तक याद रैली,
धका धैं धैं तीलू रौतेली धका धैं धैं।[14]

युगों–युगों तक नारी प्रताड़ना, अत्याचार, अन्याय और शोषण का शिकार रही है। पर्वतीय क्षेत्र में तो स्थिति और दयनीय रही। ससुराल में उसने अत्यधिक कष्ट सहे। उसके समक्ष एक तो ससुराल में मातृगृह के विपरीत और विषम वातावरण को आत्मसात करने की चुनौती रही और दूसरा पति, सास आदि की प्रताड़ना सहन करना उसकी नियती बनी रही। गीत और गाथाएं उसकी इस दोहरी व्यथा को प्रभावी ढंग से चित्रित करती हैं। पांडवों की गाथा के एक प्रसंग के अनुसार अर्जुन एक बार स्वप्न में नागलोक की सुंदरी वासुदंता पर मोहित होकर वहीं चले गए। द्रौपदी ने व्याकुल होकर इस संबंध में सास कुंती से जानकारी चाही तो सास ने द्रौपदी पर ही आरोप लगा दिया कि तू ने अर्जुन का भक्षण कर लिया और इस घटना को छिपाने के लिए मेरे पास आई है–

तब कुंती माता कनो स्वाल देंदी,
करली रूप धरी अर्जुन तिन भक्षी याले,
अर मैंम सच्ची होणू कु आइ गेइ।[15]

जिस पति के साथ सात जन्म तक साथ निभाने के फेरे लेकर नारी परिणय बंधन में बंधती है, वह उसके लिए परेश्वर की अपेक्षा पारकीय जीवन यापन करने का सूत्रधान बन जाता है। जगदेव पंवार की गाथा की चौहान्या रानी जगदेव पंवार की सात पत्नियों में बहुत

उपेक्षित थी। उसकी स्थिति बिना निराई–गुड़ाई वाले खेत की तरह थी –
सातैं राणी छै चौहान्या राणी,
राजा की छोड़ीं छै वा पुंगड़ी जनी अणगोडी।[16]

निर्जन, विषम हिम प्रदेश में योगी पति के साथ ब्याही गई नंदा ससुराल में अनेक कष्ट सहते हुए अपने पिता को कोसती है। नंदा की गाथा के अनुसार मातृगृह की याद में व्याकुल नंदा अपने पिता को कोसती है कि मेरे पिता ने अपनी सात में से किसी पुत्री का विवा समतल श्रीनगर में किया, किसी को बांका बनगढ़ में दिया, किसी को नौलखा सलाण और किसी पुत्री को काली कुमायूं में दिया, कितुं सात बहनों में सबसे लाडली मुझ बेटी को इस त्रिशूली में इस भांग पीने वाले जोगी को दे दिया।[17]

उक्त आधार पर पुष्ट होता है कि गढ़वाली लोक गाथओं में नारी संपदा विशद् एवं अत्यंत प्रभावी कोटि की है। इनमें पर्वतीय अंचल में नारी की प्राचीन स्थिति एवं पुरुष प्रधान समाज में नारी के प्रति दृष्टिकोण का जीवंत प्रस्तुतिकरण है। नारी अनेक लक्ष्मण रेखाओं को की परिधि में रहकर अपने आदर्शों की रक्षा करती प्रतीत होती है। वह उच्च मानदंड स्थापित करने के लिए पुरुष को भी संदेश एवं प्रेरणा देती है। परपुरुष के साथ संबंध स्थापित करने के लांछन को सहते हुए वह नीति वाक्यों का भी सहारा लेती है कि परपुरुष तो भई और पिता के सामान होता है, किंतु इस पर भी शंका का शिकार हो जाती है। नारी ही पुरुष को साहससिक कार्य की चुनौती देते हुए कहती है कि नारी कभी चोरी करके नहीं ले जाई जाती है। इस यह बात प्रमाणित होती है कि समाज में नीति स्थापना और उसके पालन करने में नारी का योगदान पुरुष से कहीं कम नहीं था। वह कभी ससुराल तो कभी मातृगृह पक्ष से उपेक्षित रही। उसका यह करुण क्रंदन फूट फड़ा है। सुंदर शब्द संयोजन से इन आख्यानों का वर्णन अनुभूतिजन्य है। साहस–पराक्रम के परिप्रेक्ष्य में गाथाओं की नारी महारानी लक्ष्मी बाई बन पड़ी है। पति की रक्षा करने के आलोक में वह सावित्री दिखाई देती है।

संदर्भ

1–मोहनलाल बाबुलकरः गढ़वाली लोकसाहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ–92
2–मोहनलाल बाबुलकरः हिम ओज अप्रैल–जून, 2003, पृष्ठ–12
3–डॉ.हरिदत्त भट्ट 'शैलेश': गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ–180
4–डॉ. गोविंद चातकः गढ़वाली लोकगाथाएं, सामान्य परिचय
5–डॉ. गोविंद चातकः भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भः मध्य हिमालय, पृष्ठ–243–45,267–70,289–301,304–6
6–यजुर्वेदः 8–43
7–डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश': गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ– 253
8.–डॉ. गोविंद चातकः गढ़वाली लोकगाथाएं, पृष्ठ–76
9–दैनिक जागरण, गढ़वाल संस्करण, पृ–4,19, अक्टूबर, 2009
10– डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश': गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ–293–294
11– डॉ. गोविंद चातकः गढ़वाली लोकगाथाएं, पृष्ठ–260
12– डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश': गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ–251
13– डॉ. गोविंद चातकः गढ़वाली लोकगाथाएं, पृष्ठ–128
14– डॉ. हरिदत्त भट्टः 'शैलेश': गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ–191
15– मोहन लाल बाबुलकरः गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ–122
16– डॉ. गोविंद चातकः गढ़वाली लोकगाथाएं, पृष्ठ–442
17–रमेश पोखरियाल 'निशंक': हिमालय का महाकुंभः नंदा राजजात, पृष्ठ–45

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org